हिन्दुस्तान
रविवार , 02 नवम्बर 2014

गुड़ कार्निवाल में 10 किलो गुड़ के केक ने खींचा सबका ध्यान

लखनऊ | निज संवाददाता

कुछ महिलाएं एक सभागार में गन्ने व गुड़ की रंगोली बनाने में जुटीं थीं तो वहीं दूसरी ओर छोटे-छोटे बच्चे गुड़ को चम्मच में लेकर मैदान में दौड़ लगा रहे थे। शनिवार को शुरू हुए गुड़ कार्निवाल में 10 किलो का बना गुड़ का खूबसूरत केक लोगों के आकर्षण का केंद्र रहा। वहीं कृषि विज्ञान केंद्र सीतापुर, लखनऊ, उन्नाव आदि से आए लोगों ने विभिन्न स्टॉल लगाकर दर्शकों को गुड़ के फायदों व कृषि की नई तकनीकों से अवगत कराया।

बच्चों के लिए हुईं विभिन्न प्रतियोगिताएं

स्कूली बच्चों के साथ ही कार्निवाल में आए बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इसमें बोरा दौड़, खरगोश दौड़, चम्मच गुड़ दौड़ हुई। इसमें बच्चों ने खरगोश बनकर पूरे मैदान में खूब दौड़ लगाई। वहीं बोरा दौड़ में हंसते खेलते बोरे में पैर डालकर गिरते उठंते बच्चे भी प्रतियोगिता का पूरा आनंद ले रहे थे। इस मौके पर महिलाओं के लिए भी गुड़ की रानी, गुड़ पर चित्रकला, रंगोली व निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में एक किनारे कुम्हार अपनी चाक पर दीए व खिलौने बनाकर सभी का ध्यान आकर्षित कर रहा था तो कुछ बच्चे उससे यह कला सीखने की ललक आंखों में लिए पास खड़े थे।

शनिवार को गन्ना संस्थान में गुड़ कार्निवाल में खरगोश दौड़ में भाग लेते बच्चे

गन्ना शोध की गुणवत्ता बढ़ाने की जरूरत

गुड़ उद्योग के आधुनीकरण पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। इस मौके पर नाबार्ड लखनऊ के महाप्रबंधक केके गुप्ता ने कार्निवाल का उद्घाटन किया। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के प्रेक्षागृह में आयोजित संगोष्ठी में डॉ. सोलोमन ने कहा कि वर्ष 2030 तक घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए 30 मिलियन टन चीनी की जरूरत होगी। इसके लिए देश में गन्ना शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने की जरूरत है। इस मौके पर डा.एन गोपाला कृष्णन, डॉ. बख्शी राम, सहित अन्य सदस्य मौजूद थे।

150 रुपए में गेहूं व चावल को घुन से बचा सकते हैं

घुन हमारे घरों में रखे गेहूं व चावल को नुकसान पहुंचाते हैं। इनसे बचाव के लिए लोग अनाज में दवाएं रखते हैं जो बाद में हमारे शरीर में अनाज के माध्यम से पहुंच कर नुकसान पहुंचाती हैं। इन केमिकलयुक्त दवाओं से अनाज को बचाने के लिए गुड़ कार्निवाल में सीतापुर के कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक एक ऐसा यंत्र लेकर आए जो स्टील का बना है। इसे आप जब गेहूं या चावल के ड्रम में रखकर बंद कर देते हैं तो इसके अंदर घुन जाते ही मर जाते हैं। इसकी खासियत यह है कि इसकी कीमत मात्र 150 रुपए है और साथ ही इसमें किसी दवा को रखने की जरूरत पड़ती भी नहीं पड़ती है।

दैनिक जागरण लखनऊ, 2 नवंबर 2014 www.jagran.com

बच्चों ने जाना कि गुड़ है कितना गुणक

रतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में गुड़ कार्निवाल आरंभ ■ गुड़ उद्योग के आधुनिकीकरण पर राष्ट्रीय सम्मे

ही प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे जागरण

जागरण संवाददाता, लखनऊ : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में अमूमन खेती से जुड़ी गूढ़ चर्चाएं होती है, लेकिन शनिवार को नजारा बदला हुआ था। मौका था दो दिवसीय गुड़ कार्निवाल का। एक तरफ विशेषज्ञ खेती से जुड़ी चर्चाओं में व्यस्त थे तो वहीं बच्चे गुड़ पर आधारित विभिन्न मनोरंजक प्रतियोगिताओं में। बोरा दौड़, खरगोश दौड़, गुड़ रंगोली, चित्रकला प्रतियोगिता, गुड़ पर चित्रकारी जैसे कई आकर्षक प्रतियोगिताओं में बच्चों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। दरअसल शहरी बच्चों को गुड़ के बारे में जानकारी देने व उसके गुणों के बारे में बताने के लिए इन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यही नहीं गुड़ कार्निवाल में गुड़ से बने तमाम उत्पादों को भी लोगों ने न केवल देखा बल्कि उसका स्वाद भी चखा। इसके अलावा गुड़ उद्योग के आधुनिकीकरण पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक केके गुप्ता ने किया।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि देश में उच्च गुणवत्ता युक्त गुड़ के उत्पादन तथा बढ़ावा देने के लिए तकनीकी विकास की असीम संभावनाएं है। खासतौर पर शहर में रहने वाले बच्चों, महिलाओं तथा गृहणियों के लिए गुड़ तथा इसके गुणों और लाभ के बारे में जागरूकता पैदा करने में दो दिवसीय गुड़ कार्निवाल महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। डॉ. सोलोमन ने कहा कि वर्ष 2030 तक घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए 30 मिलियन टन चीनी की आवश्यकता होगी, जिसके लिए 100 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना उत्पादकता की दर से कुल 600 मिलियन टन गन्ना उत्पादन तथा 11 प्रतिशत चीनी प्राप्त करना जरूरी है। इसके लिए देश में गन्ना शोध की गुणवत्ता बढ़ाने की जरूरत है। केके गुप्ता ने कहा कि देश की मृदा गन्ने की खेती के लिए काफी बेहतर हैं। अत: जरूरी है कि गन्ने की खेती पर ज्यादा ध्यान दें। इससे हमारी अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी। इस मौके पर डॉ. एन. गोपाला कृष्णन ने कहा गन्ना शोध में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर उच्च गुणवत्ता वाली प्रजातियां तथा आधुनिक खेती का तरीका विकसित हो।

प्रधान वैज्ञानिक एवं मीडिया प्रभारी डॉ.एके साह ने कहा कि गुड़ एवं खांड़सारी देश में कृषि आधारित सबसे बड़ा तथा प्राचीन कुटीर उद्योग है। गांवों में तो प्राचीन समय से गुड़ का उपयोग मिठास के रूप में किया जा रहा है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में गुड़ उद्योग काफी पिछड़ गया है। इसका
उद्योग के लिए निराशाजनक सरका
उत्पादन की पुरानी तकनीक, आधु
पैकेजिंग व्यवस्था की कमी है। संगो
विभिन्न राज्यों के लगभग 120 शोध
गुड़ निर्माता तथा कृषक भाग ले रहे

कार्निवाल में विभिन्न राज्यों में नि
आधारित उत्पादों की एक प्रदर्शनी भ
जा रही है। इस दौरान फैंसी ड्रेस, गु
निबंध लेखन सहित कई प्रतियोगिता
भी हुआ। इस मौके पर लोगों ने गुड़
पेय, चटनी, अन्य व्यंजन का भी लुत
रविवार को भी लोग कार्निवाल का अ
सकते है। गन्ना चूसना व रस्साकसी
आयोजित की जाएंगी।

राष्ट्रीय सहारा

लखनऊ। रविवार • 2 नवम्बर • 2014

नई तकनीक से होगा गन्ना किसानों का विकास : गुप्त

कार्यशाला में आधुनिक मशीन देखते अधिकारी।

सरोजनीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। नाबार्ड के महाप्रबंधक केके गुप्ता ने कहा देश की मृदा गन्ना की खेती के लिए काफी बेहतर है। लेकिन जरूरत इस बात की है कि ऐसी तकनीक विकसित हो जिससे छोटे किसान गन्ना किसानों को विकास हो सके। इसके लिए नीतियां बनाने वालों को ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि ऐसी नीति बनाई जानी चाहिए जो गन्ना उत्पादन की तरफ किसानों का रूझान बढ़ायें। श्री गुप्ता शनिवार को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान परिसर में गुड़ उद्योग के आधुनिकरण पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, गन्ना कार्यशाला तथा गुड़ कार्निववाल के उद्घाटन के दौरान बोल रहे थे।

इस मौके पर संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने कहा कि देश में उच्च गुणवत्ता के गुड़ के उत्पादन तथा बढ़ावा देने के लिए तकनीकी विकास की संभावनाएं हैं और इस दिशा में यह संगोष्ठी तथा कार्निवाल इस क्षेत्र में कार्यरत सभी के लिए एक नेटवर्क का अवसर प्रदान करेगा, साथ ही शहर में रहने वाले बच्चों, छात्रों, छात्राओं, महिलाओं तथा गृहणियों के लिए गुड़ तथा इसके गुणों तथा लाभ के बारे में जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। डा. सोलोमन ने कहा कि वर्ष 2030 तक घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए 30 मिलियन टन चीनी की आवश्यकता होगी जिसके लिए 100 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना उत्पादकता की दर से कुल 600 मिलियन टन गन्ना उत्पादन तथा 11 प्रतिशत चीनी परता प्राप्त करना जरूरी है।

गोष्ठी की अध्यक्षता सहायक महानिदेश डा. एन. गोपाला कृष्णन, सहायक महानिदेशक ने की जबकि गन्ना प्रजनन संस्थान कोयम्बटूर के निदेशक डा. बख्शी राम ने भी अपने विचार रखे। इससे पहले गुड़ के प्रति जन-चेतना जागृत करने हेतु संस्थान परिसर में गुड़ कार्निवाल का आयोजन भी आज शुरू हुआ। इस महोत्सव में भारत के विभिन्न प्रांतों में निर्मित गुड़ एवं गुड़ आधारित उत्पादों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की जा रही है। इस अवसर पर गुड़ को प्रोत्साहन देने के लिए बच्चों बोरा दौड़, खरगोश दौड, फैन्सी ड्रेस, गुब्बारा फुलाना, निबंध लेखन, प्रतियोगिता आयोजित की गई।

अमरउजाला

लखनऊ | 2 नवंबर 2014

गुड़ उद्योग के विकास पर जुटे वैज्ञानिक

आईआईएसआर में संगोष्ठी व गन्ना कार्यशाला का आयोजन

लखनऊ (ब्यूरो)। गुड़ उद्योग के आधुनिकीकरण को लेकर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ शुगरकेन रिसर्च (आईआईएसआर) में शनिवार को मंथन हुआ। संस्थान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारंभ के साथ ही गन्ना कार्यशाला और गुड़ कार्निवाल का भी आयोजन किया जा रहा है। पहले दिन व्याख्यान, मनोरंजक व ज्ञानवर्धक गतिविधियों में वैज्ञानिकों, किसानों और आम नागरिकों ने हिस्सा लिया।

नाबार्ड लखनऊ के मुख्य महाप्रबंधक केके गुप्ता ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। आईआईएसआर के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने देश में उच्च गुणवत्ता वाले गुड़ को नागरिकों तक पहुंचाने के लिए उत्पादन और उसकी सप्लाई के लिए अच्छे नेटवर्क की जरूरत बताई। उन्होंने बताया कि देश को 2030 तक हर साल 3 करोड़ टन गुड़ की जरूरत होगी। इसके लिए हमें हर हेक्टेयर में 100 टन गन्ना उपजाने की क्षमता विकसित करनी होगी। साथ ही इस गन्ने से 11 प्रतिशत चीनी हासिल करनी होगी। उन्होंने इसके लिए शोध की गुणवत्ता बढ़ाने और उसे किसानों तक पहुंचाने की बात कही। अध्यक्षता डॉ. एन गोपाला कृष्णनन ने की। गन्ना प्रजनन संस्थान कोयंबटूर के निदेशक डॉ. बख्शी राम ने बताया कि देश में अब तक गन्ने की 600 किस्में विकसित की जा चुकी हैं लेकिन इनमें से 35 ही काम आ रही हैं। शेष को किसानों के लिए उपयोगी बनाने पर काम किया जा सकता है। वैज्ञानिक डॉ. ओके सिन्हा और प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने कहा, इस तरह का आयोजन देश में गुड़ के उत्पादन पर मार्गदर्शन के लिए बहुत उपयोगी रहेगा। इसमें कई महत्वपूर्ण सुझाव आएंगे।

विशेषज्ञ बोले- उत्पादन और सप्लाई के लिए अच्छे नेटवर्क की जरूरत

आईआईएसआर में आयोजित कार्यशाला में जानकारी लेते विशेषज्ञ।

डेली न्यूज़
लखनऊ, रविवार, 2 नवंबर 2014

वर्ष 2030 तक देश को 30 मिलियन चीनी की जरूरत

डेली न्यूज नेटवर्क

• गुड़ उद्योग आधुनिकीकरण विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

लखनऊ। वर्ष 2030 तक घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए 30 मिलियन टन चीनी की जरूरत होगी। जिसके लिए 100 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना उत्पादकता की दर से कुल 600 मिलियन टन गन्ना उत्पादन और 11 प्रतिशत चीनी परता हासिल करना जरूरी है। इसके लिए देश में गन्ना शोध की गुणवत्ता बढ़ाने की जरूरत है। यह बात भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने शनिवार को संस्थान में गुड़ उद्योग के आधुनिकीकरण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि देश में उच्च गुणवत्ता के गुड़ के उत्पादन और बढ़ावा देने के लिए तकनीकी विकास की संभावनाएं हैं। इस दिशा में यह संगोष्ठी और कार्निवाल इस क्षेत्र में कार्यरत सभी के लिए एक नेटवर्क का अवसर प्रदान करने के साथ ही शहर में रहने वाले बच्चों, छात्रों, छात्राओं, महिलाओं तथा गृहणियों के लिए गुड़ के फायदों के बारे में जागरुकात की जरूरत है। मुख्य महाप्रबंधक केके गुप्ता ने कहा कि भारत देश की मिट्टी खेती के लिए काफी बेहतर है इसलिए जरूरी है कि हम गन्ना की खेती पर ज्यादा-ध्यान दें, ताकि हमारी अर्थव्यवस्था में भी गन्ना की खेती भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। इसके लिए जरूरी है कि हम सभी जोत वर्ग के किसानों के लिए तकनीक को विकसित करें ताकि बड़े किसानों के साथ-साथ छोटे जोत के किसानों को भी मूनाफा मिल सके। गन्ना प्रजनक संस्थान के निदेशक डॉ. बख्शी राम ने कहा कि भारत में गन्ना की अब तक लगभग 600 किस्मों को विकसित किया गया है, जबकि लगभग 30-35 किस्मों को ही किसान प्रयोग में लाते हैं। इसलिए हम सभी शोधकार्ताओं को यह सोचने की जरूरत है कि हम ऐसी किस्मों को विकसित करें, जिससे किसान और मिल के लोग संतुष्ट हों और उसे किसानों तक पहुचाया जाए। उन्होंने कहा कि किसानों द्वारा पिछले 15-20 वर्षों से एक ही किस्मों को लगाया जा रहा है, जरूरी है कि हमें किसानों को उसे किस्म की बदलने के लिए अच्छी कोई किस्म दें, ताकि किसान उन पुरानी किस्मों को बदल सके। इस मौके पर विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार रखे।

हिन्दुस्तान

लखनऊ • रविवार • 02 नवंबर 2014

खरगोश बन बच्चों ने खूब लगाई दौड़

लखनऊ। कुछ महिलाएं एक सभागार में गन्ने व गुड़ की रंगोली बनाने में जुटीं तो वहीं दूसरी ओर छोटे-छोटे बच्चे गुड़ को चम्मच में लेकर मैदान में दौड़ लगा रहे थे। शनिवार को शुरू हुए गुड़ कार्निवाल में 10 किलो का बना गुड़ का खूबसूरत केक लोगों के आकर्षण का केंद्र रहा। वहीं कृषि विज्ञान केंद्र सीतापुर, लखनऊ, उन्नाव आदि से आए लोगों ने विभिन्न स्टॉल लगाकर दर्शकों को गुड़ के फायदों व कृषि की नई तकनीकों से अवगत कराया।

बच्चों के लिए हुईं विभिन्न प्रतियोगिताएं

स्कूली बच्चों के साथ ही कार्निवाल में आए बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इसमें बोरा दौड़, खरगोश दौड़, चम्मच गुड़ दौड़ हुई। इसमें बच्चों ने खरगोश बनकर पूरे मैदान में खूब दौड़ लगाई। जिन्हें देखकर दर्शकों ने खूब आनंद लिया। वहीं बोरा दौड़ में हंसते खेलते बोरे में पैर डालकर गिरते उठते बच्चें भी प्रतियोगिता का पूरा आनंद ले रहे थे। इस मौके पर महिलाओं के लिए भी गुड़ की रानी, गुड़ पर चित्रकला, रंगोली व निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में एक किनारे कम्हार अपने चाक पर दीए व खिलौने बनाकर सभी का ध्यान आकर्षित कर रहा था। तभी कुछ बच्चे भी कुम्हार की इस कला को सीखने के लिए पहुंच गए और उन्होंने भी चाक पर अपने नन्हे नन्हे हाथों से दीया बनाया।

स्वतंत्र चेतना

लखनऊ, रविवार 02 नवम्बर 2014

गुड़ उद्योग के आधुनिकीकरण विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन

वार्ड संवाददाता

लखनऊ। 1 नवम्बर। गुड़ उद्योग के आधुनिकरण पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, गन्ना कार्यशाला तथा गुड़ कार्निवाल का उद्घाटन नबार्ड, लखनऊके मुख्य महाप्रबंधक श्री केक्र के. गुप्ता के द्वारा आज दिनांक नवंबर 01, 2014 को भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के प्रेक्षागृह में किया गया। कार्निवाल की आकर्षक शुरूआत उद्घाटन में उपस्थित वैज्ञानिकों, उद्यमियो, शोधकर्ताओं तथा कृषकों के लिए आनन्दमयी रहा। मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डा0 सुशील सोलोमन ने कहा कि देश में उच्च गुणवत्ता के गुड़ के उत्पादन तथा बढ़ावा देने के लिए तकनीकी विकास की संभावनाएं है। और इस दिशा में यह संगोष्ठी तथा कार्निवाल इस क्षेत्र में कार्यरत सभी के लिए एक नेटवर्क का अवसर प्रदान करेगा साथ ही शहर में रहने वाले बच्चों, छात्रों, छात्राओं, महिलाओं तथा गृहणियों के लिए गुड़ तथा इसके गुणों तथा लाभ के बारे में जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। डा0 सोलोमन ने कहा कि वर्ष 2030 तक घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए 30 मिलियन टन चीनी की आवश्यकता होगी जिसके लिए 100 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना उत्पादकता की दर से कुल 600 मिलियन टन गन्ना उत्पादन तथा 11 प्रतिशत चीनी परता प्राप्त करना जरूरी है। इसके लिए देश में गन्ना शोध की गुणवत्ता बढ़ाने की जरूरत है। मुख्य अतिथि श्री केक्र के. गुप्ता ने कहा कि भारत देश की मृदा गन्ना की खेती के लिए काफी बेहतर हैं। अतः जरूरी है कि हम गन्ना की खेती पर ज्यादा-ध्यान देवें ताकि हमारी अर्थव्यवस्था में भी गन्ना की खेती भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें। इसके लिए जरूरी है कि हम सभी जोत वर्ग के किसानों के लिए तकनीक को विकसित करें ताकि बड़े किसानों के साथ-साथ छोटे जोत के किसानों को भी मूनाफा प्राप्त हो। नीति बनाने वाले लोग इस पर ध्यान दें ताकि गन्ना की खेती के प्रति लोगों का रूझान बढ़े और जरूरत है कि इसमें लगने वाले लागत को कम किया जाए ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा मुनाफा हो सके। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष डा. एन. गोपाला कृष्णन, सहायक महानिदेशक ने कहा गन्ना शोध में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर उच्च गुणवत्ता वाले प्रजातियाँ तथा आधुनिक खेती का तरीका विकसित हो। गुड़ के प्रति जन-चेतना जागृत करने हेतु संस्थान परिसर में गुड़ कार्निवाल का आयोजन भी आज शुरू हुआ। इस महोत्सव में भारत के विभिन्न प्रांतों में निर्मित गुड़ एवं गुड़ आधारित उत्पादों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की जा रही है। इस अवसर पर गुड़ को प्रोत्साहन देने के लिए बच्चों (बोरा दौड़, खरगोश दौड, फैन्सी ड्रेस, गुब्बारा फुलाना, निबंध लेखन), विद्यार्थियों, छात्राओं तथा महिलाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हुआ।

कल्पतरु एक्सप्रेस
लखनऊ, रविवार, 2 नवम्बर 2014

गुड़ कार्निवाल | भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

बढ़ानी होगी गन्ना शोध की गुणवत्ता : केके गुप्ता

कल्पतरु समाचार सेवा

लखनऊ। नाबार्ड लखनऊ के अध्यक्ष केके गुप्ता ने देश की मिट्टी को गन्ना खेती के लिए काफी बेहतर बताया है। उन्होंने कहा कि गन्ने की खेती पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। हमारी अर्थव्यवस्था के विस्तार में गन्ने की खेती महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। इसके लिए जरूरी है कि सभी जोत वर्ग के क़िसानों के लिए खेती की उत्तम तकनीक विकसित की जाए। उन्होंने कहा कि देश के प्राचीन कुटीर उद्योग को बचाने के लिए सरकारी पहल बेहद जरूरी है। देश का गुड़ उद्योग पूर्व की अपेक्षा 15 प्रतिशत पर आकर सिमट गया है।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में गुड़ उद्योग के आधुनिकीकरण पर शनिवार को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, गन्ना कार्यशाला तथा गुड़

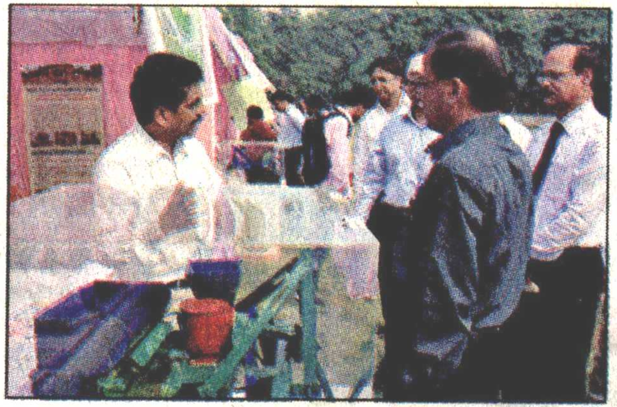

प्राचीन कुटीर उद्योग 15 प्रतिशत के दायरे में सिमटा

कार्निवाल की शुरुआत हुई। संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने कहा कि देश में उच्च गुणवत्ता के गुड़ के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए

बढ़ानी होगी गन्ना शोध की गुणवत्ता

तकनीकी विकास की सम्भावनाएं हैं। संगोष्ठी तथा कार्निवाल द्वारा सभी को एक नेटवर्क की सुविधा प्राप्त होगी। इससे शहरवासियों में गुड़ तथा इसके

वर्ष 2030 में 30 मिलियन टन चीनी की होगी आवश्यकता

गुणकारी लाभों के बारे में जागरूकता पैदा होगी।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2030 तक घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए 30 मिलियन टन चीनी की जरूरत होगी। इसके लिए 100 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना उत्पादकता की दर से कुल 600 मिलियन टन गन्ना उत्पादन तथा 11 प्रतिशत चीनी का औसत प्राप्त करना जरूरी है। इसके लिए देश में गन्ना शोध की गुणवत्ता बढ़ानी होगी।

पेश की गई गन्ना शोध पर रिपोर्ट

अखिल भारतीय गन्ना शोध समन्वय परियोजना की 30वीं द्वैवार्षिक कार्य देश के विभिन्न राज्यों से 22 नियमित गन्ना शोध केन्द्रों तथा 15 स्वैच्छिक के लगभग 125 शोधकर्ता एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया। डॉ. ओके सिन्हा शोध समन्वय परियोजना की रिपोर्ट प्रस्तुत की और दो वर्षों के दौरान गन्ना प्रगति रिपोर्ट पेश की।

देश के प्राचीन कुटीर उद्योग पर संक

प्रधान वैज्ञानिक एवं मीडिया प्रभारी डॉ. एके साह ने कहा कि गुड़ एवं खां उद्योग देश में कृषि आधारित सबसे बड़ा तथा प्राचीन कुटीर उद्योग है। प्रा से गांवों में गुड़ का उपयोग किया जा रहा है। लेकिन, पिछले कुछ दशकों उद्योग काफी पिछड़ गया है। इसका मुख्य कारण गुड़ उद्योग के लिए निरा सरकारी सहायता, गुड़ उत्पादन की पुरानी तकनीक एवं आधुनिक भण्डार पैकेजिंग व्यवस्था की कमी है।

सहायक महानिदेशक डॉ. एन गोपालाकृष्णन ने कहा कि गन्ना शोध में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जाना चाहिए, जिससे उच्च गुणवत्ता वाली प्रजातियां विकसित हों और आधुनिक तरीके से गन्ने की खेती की जा सके। गन्ना प्रजनव कोयम्बटूर के निदेशक डॉ. ने बताया कि देश में अबत लगभग 600 किस्मों व किया गया है, लेकिन 30 को ही किसान प्रयोग में ल

SUNDAY HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
NOVEMBER 02, 2014

Cane carnival at IISR

LUCKNOW: The two-day national meet on modernization of jaggery industry, sugarcane workshop and jaggery carnival began on Saturday at the Indian Institute of Sugar-cane Research. Jaggery carnival is aimed at creating awareness among kids, students and house wives about the health benefits of jaggery by showcasing the cane sugar and related value added products. A large number of children, students and women participated in competitions with much enthusiasm.

sunday pioneer
LUCKNOW SUNDAY | NOVEMBER 2, 2014

Jaggery carnival begins

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

A two-day national meet on modernisation of jaggery industry, workshop on sugarcane and jaggery carnival was inaugurated by KK Gupta, chief general manager of NABARD, at the Indian Institute of Sugarcane Research.

Welcoming the chief guest and delegates, IISR director S Solomon remarked that the ever-increasing population coupled with associated challenges, necessitated it to achieve a target sugar production of about 36 million tons, with increased sugarcane production, productivity and sugar recovery by 2030, from the present productivity and recovery levels. He also said that there was need to intensify research efforts for technological advancement in quality jaggery and value added jaggery production in the country.

Solomon said that the platform would provide networking opportunities to researchers, processors, entrepreneurs, growers and city folks for sharing of knowledge and information in researches in sugarcane and jaggery which will create awareness among large mass about benefits of jaggery production and health benefits of its consumption. In the national meet, workshop and carnival, more than 250 researchers, entrepreneurs, manufacturers, development workers and farmers are participating.

Delivering inaugural address, KK Gupta said that the cane sugar productivity in India was low in comparison to countries like Mauritius and others.

"Low-cost technology needs to be evolved for small and marginal farmers who are in majority. A strategy is needed to chalk out for increasing investments to create advance research and development infrastructures in cane cultivation and jaggery production," he said.

Chairing the inaugural session, N Gopala Krishnan, ADG (CC), ICAR, New Delhi, said that sugarcane researchers must develop cutting-edge technology by applying biotechnological and molecular marker tools for managing sugarcane diseases and pest in more effective manner.

Bakshi Ram, director from Coimbatore, presented the status on the variety and said that during last 7-8 decades, about 600 cane varieties had been developed out of which only 30-35 varieties were being adopted by the farmers and the situation was not at all desirable. "There is need to change the adoption scenario by developing smart cane variety based on emerging demand for high tonnage

and said that AICRP had been co-ordinating and monitoring multi-locational testing of advanced breeding material and germ plasm for identification of location-specific improved sugarcane varieties and also of improved agro-techniques and plant protection strategies in this crop, since its initiation in 1971. The sharing of benefits of technologies identified after testing is also ensured through this system.

Media spokesperson of the Institute AK Sah said jaggery and khandsari industry had been one among the most important sugarcane-based cottage industries of India.

"With an annual production of approximately 6-8 MT, India accounts for almost 70 per cent of the world jaggery production and exports 2-3 lakh MT of jaggery. Besides being an important natural sweetener, jaggery is a source of energy and nutrition, thereby making it an important component of nutritional security package," said Sah. He said that despite its tremendous scope, jaggery had remained in the background, with several challenges like low recovery, reduced shelf life, lack of modern facilities etc.

Organising secretary of the seminar, SI Anwar remarked that with the demand for jaggery steadily growing in rural, urban and semi-urban areas, jaggery and related industries needed to be revived and modernised so that it became competitive, gearing up to the demands of globalisation and trade liberalisation in international market. The delegates of the meet will share and discuss the issues of modernising the jaggery industry in India.

In the jaggery carnival, competitions like sack race, rabbit race, run with jaggery cubes, drawing, carving on jaggery, fancy dress competition, balloon blowing etc were organised. The carnival is aimed at creating awareness among children, students and women about the health benefits of jaggery by showcasing the jaggery and related value added prod-